प्रेस विज्ञप्ति
तत्काल जारी करने के लिए
22 नवंबर, 2024

वरिष्ठ पत्रकार और विशेषज्ञ वेटलैंड संरक्षण पर राष्ट्रीय मीडिया परामर्श में एकत्र हुए

नई दिल्ली: तीन दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया सहभागिता कार्यक्रम का दूसरा दिन द ललित, नई दिल्ली में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ, जिससे वेटलैंड संरक्षण के लिए मीडिया सहभागिता को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ। इस परामर्श की शुरुआत कल जामिया हमदर्द में नवोदित पत्रकारों के लिए आयोजित क्षमता निर्माण कार्यशाला से हुई थी, और आज इसमें वरिष्ठ पत्रकारों, पर्यावरण विशेषज्ञों और नीति निर्माताओं ने वेटलैंड संरक्षण रिपोर्टिंग के महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की।

उद्घाटन सत्र में डॉ. सुजीत बाजपेयी, वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के सदस्य (पूर्व में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के वेटलैंड डिवीजन के संयुक्त सचिव) ने अपने संबोधन में वेटलैंड संरक्षण और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में वायु गुणवत्ता सुधार के बीच के संबंध पर बल दिया।

श्री रवींद्र सिंह, निदेशक, इंडो-जर्मन जैवविविधता कार्यक्रम, जीआईज़ेड ने कार्यक्रम के उद्देश्यों की जानकारी दी और इसके इंडो-जर्मन सहयोग की जड़ों को उजागर किया। वहीं, श्री सुरेश बाबू, सीनियर डायरेक्टर-इकोलॉजिकल फुटप्रिंट, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ-इंडिया ने उपस्थित सभी लोगों से वेटलैंड मित्र बनने का आह्वान किया और वेटलैंड इकोसिस्टम नवाचार की आवश्यकता पर जोर दिया।

डॉ. रितेश कुमार, निदेशक, वेटलैंड्स इंटरनेशनल साउथ एशिया ने भारत में वेटलैंड्स के इतिहास, वर्तमान स्थिति और इससे जुड़ी महत्वपूर्ण सीखों पर चर्चा की। इसके अलावा, डॉ. रमेश एम, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने मंत्रालय की वेटलैंड संरक्षण पहलों को साझा किया।

डॉ. वसंती राव, महानिदेशक, सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज (CMS) ने वेटलैंड संरक्षण में मीडिया की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा, "आज की पर्यावरण पत्रकारिता को सिर्फ मुद्दों की रिपोर्टिंग से आगे बढ़कर विज्ञान, नीति और जनसमुदाय की समझ के बीच सेतु का काम करना चाहिए।"

मुख्य आकर्षण के रूप में "वेटलैंड रिपोर्टिंग में चुनौतियां और समाधान" पर एक पैनल चर्चा आयोजित की गई, जिसमें प्रमुख पर्यावरण पत्रकारों जैसे रामनाथ गोयनका पुरस्कार विजेता श्रीमती श्वेता ठाकुर नंदा, इंडिया टुडे के वरिष्ठ पत्रकार श्री पुष्यमित्र, और दिल्ली विश्वविद्यालय के बायोडायवर्सिटी पार्क्स प्रोग्राम के वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री फैयाज़ अहमद खुडसर ने अपने विचार साझा किए। इस पैनल चर्चा का संचालन डॉ. वसंती राव ने किया, और इसमें वेटलैंड संरक्षण कवरेज में आने वाली चुनौतियों और पर्यावरण पत्रकारिता के नवीन दृष्टिकोण पर चर्चा की गई।

दोपहर के सत्र में पीपल्स आर्काइव ऑफ रूरल इंडिया (PARI) की सुश्री दीपांजली सिंह द्वारा एक खुली चर्चा आयोजित की गई, जिसमें वेटलैंड-आधारित मीडिया सहभागिता के लिए व्यावहारिक समाधान साझा किए गए।

कार्यक्रम का समापन कल ग्रेटर नोएडा के सुरजपुर वेटलैंड्स में फील्ड विजिट के साथ होगा, जहां प्रतिभागियों को वेटलैंड इकोसिस्टम और संरक्षण चुनौतियों का प्रत्यक्ष अनुभव मिलेगा। यह फील्ड विजिट वेटलैंड रिपोर्टिंग और डॉक्यूमेंटेशन में व्यावहारिक जानकारी प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण अवसर होगा।

सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज (CMS) द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम को इंडो-जर्मन तकनीकी सहयोग परियोजना "वेटलैंड्स मैनेजमेंट फॉर बायोडायवर्सिटी एंड क्लाइमेट प्रोटेक्शन" के तहत आयोजित किया जा रहा है। इस परियोजना को GIZ द्वारा जर्मन संघीय पर्यावरण मंत्रालय (BMUV) और अंतर्राष्ट्रीय जलवायु पहल (IKI) के सहयोग से भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEF&CC) के साझेदारी में लागू किया जा रहा है।

परिचय:

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEF&CC): यह मंत्रालय भारत सरकार की केंद्रीय एजेंसी है जो पर्यावरण और वानिकी नीतियों और कार्यक्रमों की योजना, प्रोत्साहन, समन्वय और क्रियान्वयन की देखरेख करती है।
वेबसाइट: https://moef.gov.in

IKI-BMUV: यह एक वैश्विक वित्तीय कार्यक्रम है जो जलवायु परिवर्तन न्यूनीकरण, जैवविविधता संरक्षण और सतत विकास से जुड़े परियोजनाओं का समर्थन करता है।
वेबसाइट: https://www.giz.de/en/worldwide/368.html

सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज (CMS): 1991 में स्थापित, यह एक स्वतंत्र और गैर-लाभकारी बहु-विषयक संगठन है जो सामाजिक विकास, पर्यावरण, संचार, मीडिया और पारदर्शिता के मुद्दों पर शोध, क्षमता निर्माण और वकालत करता है।
वेबसाइट: https://www.cmsindia.org

For more information, please contact

Mr Sabyesachi Bharti, Deputy Director, CMS- VATAVARAN
sabyesachi@cmsvatavaran.org,
Mob: +918826689218(WhatsApp) or +91 9818367459